अष्टछाप के कवियों का परिचय 1

B.A
Part - I
Paper - I

(1) कुम्भनदास — (5) गोविन्द स्वामी
(2) सूरदास — (6) छीतस्वामी
(3) कृष्णदास — (7) नन्ददास
(4) परमानन्ददास — (8) चतुर्भुजदास

अष्टछाप

पुष्टि मार्ग के संस्थापक महाप्रभु वल्लभाचार्य के चार और उनके पुत्र विट्ठलदास के चार प्रधान शिष्य अष्टछाप कवि के नाम से प्रसिद्ध है — इन कवियों का रचना सन 1500 से 1586 तक अनुमान किया जाता है। महाप्रभु वल्लभाचार्य सन 1530 में गोलोकवासी हुए, अब अनेक पुत्र गोपीनाथ पुष्टिमार्ग के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए परन्तु आठ वर्ष बाद 1538 में इन भी गोलोकवास हो गया उनके पुत्र पुरुषोत्तम का देहावसान पहले ही चुका था। अतः वल्लभाचार्य के छोटे पुत्र विट्ठलदास आचार्य पद के अधिकारी हुए विट्ठलनाथ जो ही अपने पिता और स्वयं अपने सैंकड़ो शिष्यों में से उपर्युक्त आठ परमभगवदीय और काव्य प्रतिभा सम्पन्न भक्तों को छाँटकर उन्हें अष्टछाप नाम से प्रतिष्ठित किया है। सम्प्रदाय के हित में विट्ठलनाथ की यह सबसे महत्वपूर्ण सेवा कही जा सकती है। क्योंकि इन विशेष रूप से सम्मानित आठ कवियों द्वारा पुष्टिमार्गीय भक्ति का जितना प्रचार हुआ उतना किसी अन्य साधन से सम्भव नहीं था। यहाँ से इन सभी कवियों का क्रमिक ढंग से विवेचना करके जा रहा है।

(1) **सूरदास** :→ अष्टछाप के कवियों में सूरदास का स्थान सर्वोपरि है ये एक त्यागी विरक्त और प्रेमी भक्त थे। वल्लभाचार्य से पुष्टि मार्गीय दीक्षा (प्राप्तकर) पाकर सूरदास ने कृष्ण प्रेम में लीन होकर कृष्ण की लीलाओं का वर्णन सुन्दर सरस मार्मिक पदों में प्रस्तुत किया सूर काव्य का मुख्य विषय कृष्ण भक्ति है। भागवत पुराण को उपजीव्य मानकर उन्होंने राधा कृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन सूर सागर में किया है। वात्सल्य और शृंगार इन दोनों रसों को सूर के काव्य में प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ है। वात्सल्य में सूर ने केवल बालकों के बाह्य सौन्दर्य एवं शारीरिक चेष्टाओं को ही नहीं उनकी अन्त प्रकृति के भी सजीव एवं मार्मिक चित्र अंकित किये हैं। कृष्ण के चित्रण तथा राधा और अन्य गोपियों के साथ उनकी प्रेम क्रीड़ाओं के वर्णन में संयोग शृंगार की अभिव्यक्ति सुन्दर ढंग हुई है। इसी प्रकार कृष्ण के विरह में गोपियों की व्याकुलता पीड़ा औत्सुक्य निराशा आदि के वर्णन में शृंगार का ~~परिचय~~ परिपाक मनो वैज्ञानिक ढंग से हुआ है। विरह वर्णन के अन्तर्गत सूर के भ्रमरगीत प्रसंग में वाग्वैदग्ध्य वाग्वैदग्ध्य और भावुकता का विलक्षण समन्वय दृष्टिगत होता है। सूर के पदों में अनुभूति के गांभीर्य

भाषा की प्रौढ़ता और संगीत का माधुर्य सूर का भरा पड़ा है।

(2)

सूर का कवित्व → सूरदास स्वयं अपने मन लीला का वर्णन

सूर कहते हैं तो मानो अलंकार शास्त्र हाथ जोड़कर अनेक पीछे पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है। रूपकों की वर्षा होने लगती है। संगीत के प्रवाह में कवि स्वयं बह जाता है और अपने को भूल जाता है। काव्य इस तन्मयता के साथ शास्त्रीय पद्धति का निर्वाह विरह है। पद पद पर मिलने वाले अलंकारों को देखकर कोई अनुमान नहीं कर सकता कि कवि जान बूझकर अलंकारों का उपयोग कर रहा है। पन्ने पर पन्ने पढ़ते जाइए केवल उपमाओं और रूपकों की घटा उत्प्रेक्षा का ठाठ लक्षण और व्यंजना का चमत्कार यहाँ तक कि एक ही चीज दो दो चार चार दस दस बार तक दुहराई जा रही है फिर भी स्वाभाविक और सहज प्रवाह कहीं भी आहत नहीं हुआ जिसने सूरसागर नहीं पढ़ा वह यह बात सुनकर शायद अजीब सी लगेगी शायद वह विश्वास ही नहीं करे सकें पर बात सही है काव्य गुणों की इस विशाल बनस्थली में एक अपना सहज सौन्दर्य है। वह रमणीय उद्यान के समान नहीं जिसका सौन्दर्य पद पद पर माली के कृतित्व की याद दिलाया करता है। बल्कि उस अकृत्रिम वन भूमि की भाँति है। जिसका रचयिता रचना में ही घुल गया है हिन्दी साहित्य उद्भव और

(2) नन्ददास → अष्टछाप के कवियों में (विकास ह० प्र० द्विवेदी)

नन्ददास का स्थान काव्य सौष्ठव और भाषा की प्रांजलता की दृष्टि से सूरदास बाद समझा जाता है। नन्ददास की रास पंचाध्यायी भाग दशम स्कन्ध भंवरगीत रूपमंजरी रसमंजरी विरहमंजरी आदि अनेक रचनाएँ उपलब्ध हैं। इनकी अनेकार्थ मंजरी एक प्रकार का पर्याय कोश ग्रन्थ है। मान मंजरी में भी शब्दों का पर्यायवाची ही लिखे गए हैं। विरहमंजरी भावात्मक काव्य है। उसमें कृष्ण वियोग में एक ब्रजबाला के वियोग का विरह दशा का वर्णन है। रूपमंजरी नन्ददास का लघु आख्यान काव्य है। रासपंचाध्यायी में लौकिक एवं पार लौकिक प्रेम का समन्वित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास है। भंवर गीत नन्ददास के परिपक्व दर्शन ज्ञान विवेक युक्त तार्किक शैली और प्रगाढ़ भक्ति का परिचायक काव्य है। नन्ददास के सम्पूर्ण ग्रन्थ परिमार्जित ब्रजभाषा में है।

(3) परमानन्ददास → अष्टछाप के कवियों में परमानन्द दास का प्रमुख स्थान है। उनकी पुस्तक परमानन्द सागर प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि उसमें भी लगभग पद ही पाये जाते हैं जो प्रतिपद हुए हैं। उसमें 836 ही पद है। बाल स्वरूप के वर्णन में उनका भी महत्वपूर्ण स्थान है।

बाल विनोद गोपाल देखत भाहि भावै।

प्रेम पुलकि आनन्द भरि जसोमति गुन गावै।

सूर की तरह इन्होंने भी वृन्दावन का संयोग और वियोग दोनों पक्षों का अनेक हृदय ग्राही चित्र अपने पदों में अंकित किये हैं। उनकी भाषा